ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-6* Issue-7* October-2021
Anthology : The Research

परिवार की संरचना में बदलता परिदृश्य एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

Changing Scene in Family Structure A Sociological Study

Paper Submission: 10/10/2021, Date of Acceptance: 22/10/2021, Date of Publication: 23/10//2021

मन्जुला एलांसे
सहायक प्राध्यापक,
समाजशास्त्र विभाग,
भगतसिहं शासकीय
स्नातकोत्तर महावि द्यालय
जावरा, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश

कोई भी ऐसा समय नहीं था जब परिवार न रहा हो, और न ही भविष्य में ऐसी कल्पना की जा सकती है। परिवार मानव व्यवहार को नियंत्रित करने तथा उसे एक जैविकीय प्राणी से सामाजिक प्राणी बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। परिवार के पारम्परिक कार्यो का अन्य संस्थाओं द्वारा कार्य करना एवं अन्तः पीढ़ी संघर्ष व पारिवारिक तनावों की अधिकता हो गई है। अगर परिवारों को समय रहते नहीं बचाया गया तो हमारी नई पीढ़ी ज्ञान सम्पन्न होने के बाद भी दिशाहीन होकर विकृतियों में फंसकर अपना जीवन बर्बाद कर देगी।

There has never been a time when there has not been a family, nor can the future be imagined. The family plays an important role in controlling human behavior and transforming it from a biological being to a social animal. The traditional functions of the family have been replaced by other institutions and there has been an increase in intergenerational conflicts and family tensions. If the families are not saved in time, then our new generation, even after being enlightened, will be directionless and get trapped in the distortions and waste their lives.

मुख्यशब्दः परिवार, यौन साम्यवाद का सिद्धांत, शास्त्रीय सिद्धांत।
Keywords: Family, Theory of Sexual Communism, Classical Theory.

प्रस्तावना

परिवार एक सार्वभौमिक अनिवार्य सामाजिक संस्था है। कोई भी ऐसी समय नहीं था जब परिवार न रहा हो, और न ही भविष्य में ऐसी कल्पना की जा सकती है। परिवार मानव व्यवहार को नियंत्रित करने तथा उसे एक जैविकीय प्राणी से सामाजिक प्राणी बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। मैकाईवर व पेज ने परिवार को सनातन कहा है। परिवार की स्थिति समाज में त्रिरूपी है-प्राथमिक समूह यौन आवश्यकताओं की पूर्ति तथा नियमों और कार्यो की व्यवस्था के रूप में। अरस्तु ने इसे राज्य की भी प्राथमिक और मौलिक इकाई माना है।

मैकाईवर वे पेज "परिवार एक समूह है, जो लिंग संबंधों के आधार पर परिभाषित किया जाता है, और काफी छोटा एवं स्थायी है कि बच्चो की उत्पत्ति और पालन करने की व्यवस्था करने योग्य है।"

परिवार मनुष्य के जीवन का बुनियादी पहलू है। परिवार मनुष्य को मनौवैज्ञानिक सुरक्षा प्रदान करता है। प्रेम ,स्नेह, सहानुभूति, परानुभूति, आदर, सम्मान जैसी भावनाऐं सिखाती है। धार्मिक क्रियाकलाप, नैतिकता की सीख व संस्कार परिवार से आते है, इसीलिए प्लेटो कहते है, कि "परिवार मनुष्य की प्रथम पाठशाला है"

विश्व परिवार दिवस प्रतिवर्ष 15 मई को मनाया जाता है। देश व दूनिया को परिवार के महत्व को बताने के लिए यह दिवस मनाया जाता है। इस दिन की शुरूआत संयुक्त राष्ट्र अमेरिका ने 1994 को अन्तर्राष्ट्रीय परिवार वर्ष घोषित कर की थी।

अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत समाजशास्त्रीय अध्ययन बिन्दु परिवारों पर केन्द्रित है।

1. परिवारों की उत्पत्ति के कई आधार है, वर्तमान में एक विवाही परिवारों में बदलते आयामों का अध्ययन करना है।
2. हिन्दू परिवार की संरचना व संगठन का अध्ययन करना।
3. हिन्दू परिवारों में होने वाले संरचनात्मक व प्रकार्यात्मक अध्ययन करना एवं परिवारो पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
4. हिन्दू परिवारों के सामाजिक मूल्यों धार्मिक विश्वासों व रीतिरिवाजों को समझना व परिवर्तन का अध्ययन करना।
5. परिवारों के विभिन्न पहलुओं का जैसे महिलाओं की स्थिति वैवाहिक स्थिति व बुजुर्गो की स्थिति आदि का वर्तमान बदलते परिवेश में परिवर्तन का अध्ययन करना।
6. युवा पीढ़ी का परिवार के प्रति बदलता दृष्टिकोण का अध्ययन।

आधुनिकीकरण तथा विकास की अंधी दौड़ में व्यक्ति इतना व्यस्त है, कि उसे क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिये, इन सब बातों से बेखबर पश्चिमी संस्कृति को ग्रहण करता जा रहा है। हिन्दु संस्कृति जिसका विदेशी लोग लोहा मानते है, तथा उसका अनुकरण कर रहे है। लेकिन हिन्दुस्तानी भ्रमित है। अपसंस्कृति के वशीभूत होकर अच्छे संस्कारों से दूर होते जा रहे है।

वास्तव में परिवार की उत्पत्ति कैसे हुई, इस संबंध में मानव शास्त्रियों, समाजशास्त्रीयों व अन्य विद्वानों ने अभी तक कोई गतैक्य नहीं हुआ है। परिवार की उत्पत्ति विवादास्पद है। इस संबंध में विभिन्न सिद्धांत प्रतिपादित किये जाते रहे है। प्रमुख सिद्धांत निम्न प्रकार है।

शास्त्रीय सिद्धांत

इस सिद्धांत के प्रर्वतकों में यूनान के प्रमुख दार्शनिक प्लेटो और अरस्तु का नाम मुख्य है, इस सिद्धांत के अनुसार परिवार की उत्पत्ति पुरूष शक्ति के परिणाम से हुई। सन् 1861 मे हेनरी मेन ने इस सिद्धांत का समर्थन किया। यदि हम पशु पक्षी जगत का अवलोकन करें तो हमें देखने को मिलता है, कि नर मादा के उपर अपन अधिकार रखने का प्रयत्न करता है। यही विचार परिवार की उत्पत्ति में मूल रूप से निहित था।

इस सिद्धांत का महत्व 18 वी शताब्दी के अंत तक बना रहा किन्तु आगे चलकर विद्वानों ने इसे अमान्य ठहरा दिया। विश्व के सभी समाजों के अध्ययन से ज्ञात हुआ कि सब जगह पितृसतात्मक परिवार नहीं है।

यौन साम्यवाद का सिद्धांत

परिवार की उत्पत्ति के संबंध में यह दूसरा महत्वपूर्ण सिद्धांत है। इस सिद्धांत की मूल आत्मा यह है कि परिवारों का जन्म समाज में प्रचलित यौन साम्यवाद के कारण हुआ है। इसके समर्थक रहे है-मार्गन, लुबाक, फेजट और ब्रीफाल प्रमुख। यौन साम्यवाद की इस स्थिति के कष्टों और लड़ाई झगड़ो के निवारण हेतु यौन संबंधो पर नियंत्रण कर मानव ने परिवार व विवाह की उत्पत्ति की।

वेस्टर मार्क ने यह स्पष्ट किया है, कि पुरूष इर्ष्यालु होता है, वह नहीं चाहता है, कि दूसरे व्यक्तियों का उसकी पत्नी पर प्रभाव पड़े। इस आधार पर यौन साम्यवाद का सिद्धांत स्वीकार्य नहीं है।

मातृसतात्मक सिद्धांत

इस सिद्धांत के अनुसार परिवारों का जन्म माता की सत्ता के कारण हुआ है। इसके समर्थक बैक्रोफन, टायलर और ब्रिगफाल्ट है। इनके अनुसार विकास की प्रारंभिक अवस्था में बच्चे पिता के बारे में जानकारी नहीं रखते थे।

यद्यपि परिवार में माता की स्थिति को अस्वीकार नहीं किया जा सकता किन्तु यह परिवार की उत्पत्ति का एक मात्र सिद्धांत नहीं है। पारिवारिक संगठन में ही नहीं सम्पूर्ण सामाजिक संगठन में स्त्री की अपेक्षा पुरूष का विशेष हाथ रहा है।

एक विवाही सिद्धांत

इस सिद्धांत के समर्थक वेस्टर मार्क है। डार्विन के सिद्धांत का समर्थन करते हुए उन्होंने कहा है कि परिवार का जन्म पुरूष के आधिपत्य व ईर्ष्या के कारण हुआ है। मैलिनोवस्की ने लिखा है, कि एक विवाह ही विवाह का सच्चा स्वरूप है, रहा है तथा रहेगा।

एक विवाह परिवार का सिद्धांत तर्कपूर्ण होते हुए भी भ्रमपूर्ण है। इतिहास इस बात का साक्षी है, बहुपति व बहुपत्नि विवाह होते रहे है। हम केवल एक सिद्धांत को ही परिवार की उत्पत्ति का सिद्धांत नहीं मान सकते।

उद्विकावादी सिद्धांत

उद्विकासवादी सिद्धांत का परिवार की उत्पत्ति में महत्वपूर्ण स्थान है। यह सिद्धांत सर्वप्रथम ब्रेकोफन ने प्रस्तुत किया जिसे बाद में स्पेन्सर, टायलर, मैकलेनन लुबोक आदि ने समर्थन किया। बैक्रोफन के अनुसार परिवार की उत्पत्ति किसी समझौते के कारण नहीं हुई, बल्कि इसका विकास कुछ स्तरों से होकर हुआ हैः-

1. कामाचार
2. बहुपति विवाह
3. बहुपत्नि विवाह
4. एक विवाही परिवार

मार्गन तथा एन्जिल्स ने परिवार के पांच स्तरों का उल्लेख किया है।

1. रक्त संबंधी परिवार
2. समूह परिवार
3. सिन्डेर्स्मियन परिवार
4. पितृ सत्तात्मक परिवार

उद्विकासीय सिद्धांत व्यावहारिक दृष्टि से उचित प्रतीत नहीं होता इसके आधार पर हम यह नहीं मान सकते कि एक विवाह आधुनिक समाज का एक मात्र स्वरूप है। परिवार में होने वाले विभिन्न परिवर्तन और उनके कारण पारिवारिक ढांचे में होने वाले परिवर्तनों में तीन परिवर्तन उल्लेखनीय है।

1. वैवाहिक समझौते में शिथिलता-तलाक
2. महिलाओं की आर्थिक स्थिति में परिवर्तन
3. धर्म के नियंत्रण में शिथिलता

परिवार में आधुनिक परिवर्तन-

आज परिवार के आकार में परिवर्तमन होता जा रहा है, क्योंकि परिवार के अधिकांश सदस्य नगरों व औद्योगिक क्षेत्रो में कार्य व व्यवसाय के उद्देश्य से जाते है व वहीं पर अपनी पत्नी व बच्चों के साथ बस जाते है। ''कम संतान सुखी परिवार'' की धारणा आज प्रमुख है।

परिवार के सहयोगी आधार में परिवतर्न

जहां पहले परिवार का प्रत्येक सदस्य, सभी सदस्यों के बारे में सोचता था, कार्य करता था तथा प्रत्येक कार्य में सहयोग करता था वहां आज प्रत्येक सदस्य स्वयं के स्वार्थ में लिप्त रहता है अपनी इच्छा ही सर्वोपरी रखता है। परिवार के लिए त्याग जैसी भावनाएँ समाप्त होने लगी है।

पारिवारिक संबंधो में परिवर्तन

परिवारों में पाये जाने वाले संबंध भी उतने घनिष्ठ तथा मधुर नहीं रह गए है जितने की पहले थे। पति तथा पत्नि के मध्य जो संबंध था कि पति परमेश्वर है आज धारणा पूर्णतया बदल गई है। भाई-भाई तथा माता-पिता व बच्चों के मध्य संबंधो की मधुरता स्नेह, सौहार्द आदि में कमी आती जा रही है।

पारिवारिक कार्यो में परिवर्तन

वर्तमान समय में परिवार के सदस्यों की स्थिति तथा पारिवारिक कार्यो में क्रांतिकारी परिवर्तन हुए है, जहाँ परिवारों में बच्चों की उत्पत्ति से पालन पोषण, जीवन मूल्यों से परिचय संस्कार आदि महत्वपूर्ण कार्य होता था, वहीं यह कार्य आज दूसरी संस्थाओं ने ले लिया है।

परिवार के सदस्यों की स्थिति एवं अधिकार में परिवर्तन

पहले स्त्रीयों की दशा अत्यन्त दयनीय हुआ करती थी उसकी स्थिति दासी की तरह थी हर क्षैत्र में प्रताड़ित होती रहती थी किन्तु आज वहीं स्त्रीयां परिवारों में पुरूषों के समान स्थान पाती है तथा पति की दासी नहीं सहयोगी मानी जाती है। बुजुर्गो की स्थिति महत्वपूर्ण होकर सभी क्षैत्रो में उनका सम्मान व सभी कार्यो में उनकी राय महत्वपूर्ण हुआ करती थी, उनकी स्थिति आज बहुत खराब है।

पारिवारिक स्नेह, प्रेम व सद्भावना में परिवर्तन

स्वार्थ की बहुलता और औपचारिक संबंधो के कारण परिवार के अंदर जो प्रेम स्नेह, सहानुभूति, सद्भावना, लगाव पाया जाता था वह समाप्त होता जा रहा है। आज न तो रिश्तेदारों का कोई महत्व रह गया है, और न ही पड़ोसियों या संबंधियों का। संबंधो का निर्वाह मात्र औपचारिकता रह गया है। कहावत प्रचलन मे थी कि ''सो गोती न एक पड़ौसी'' अर्थात 100 रक्त संबंधियों के बराबर एक पड़ौसी का मान। वहीं आज पड़ौसियों में तनाव, घृणा तथा ईर्ष्या अधिक देखने को मिलती है।

निष्कर्ष

भारत में परिवार के परिवर्तित प्रतिमानों के संबंध में हम निम्न निष्कर्ष निकाल सकते है।
परिवारों का आकार सिमटता जा रहा है। पति-पत्नि के संबंधो में परिवर्तन होता जा रहा है, महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता अधिकता व बच्चों के पालन पोषण में अधिक ध्यान दिया जाने लगा है, संयुक्त परिवारों के स्थान पर एकल परिवारों की संख्या तीव्र गति से बढ़े है। हम निम्न निष्कर्ष निकाल सकते है।

1. परिवारों में परिवार नियोजन की प्रवृत्ति को बढ़ावा मिला है।
2. प्राथमिक परिवारों की वृद्धि।
3. अन्तर्जातीय एवं अन्तः धार्मिक विवाहों के विरोध में कभी।
4. व्यक्तिगत संबंधों की प्रधानता।
5. जीवन साथी के चुनाव के तरीकों में बदलाव।
6. महिलाओं द्वारा उच्च आर्थिक पदों पर कार्य करना।
7. धार्मिक गतिविधियों में कमी।
8. महिलाओं की सामाजिक स्थिति में सुधार।
9. परिवार के पारस्परिक कार्यो का अन्य संस्थाओं द्वारा करना।
10. लिव इन रिलेशनशीप वाले परिवारों की अधिकता।
11. बुजुर्गो की दयनीय दशा।
12. अन्तः पीढ़ी संघर्ष व पारिवारिक तनावों की अधिकता हो गई है।
13. पारस्परिक सामाजिक मूल्यों का विघटन।

भारत मंे प्राचीनकाल से ही संयुक्त परिवार की धारणा रहीं है। वृद्धों का संबल प्राप्त होता है, उनके अनुभव व ज्ञान से युवा व बाल पीढ़ी लाभान्वित होती रहीं है। संयुक्त पूंजी संयुक्त निवास संयुक्त उत्तरदायित्व के कारण वृद्धों का प्रभुत्व रहने के कारण परिवार में अनुशासन व आदर का माहौल हमेशा बना रहता है, लेकिन बदलती पारिवारिक तस्वीर मे तीव्र औद्योगिकीकरण, नगरीयकरण आदि के कारण परिवारों की परम्परा चरमराने लगी है। मोबाईल संस्कृति, उपभोक्तावादी संस्कृति अपरिपक्वता, व्यक्तिगत आकांक्षा, स्वकेन्द्रित विचार, लोभी मानसिकता, आपसी मनमुटाव के कारण संस्कृति छिन्न-भिन्न हो गई है, इसी वजह से संतुलन की कमी दिखती है, जो परिवार के टुटने का कारण बनती है।
अगर परिवारों को समय रहते नहीं बचाया गया तो हमारी नई पीढ़ी ज्ञान सम्पन्न होने के बाद भी दिशावीन होकर विकृतियों में फंसकर अपना जीवन बर्बाद कर देगी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *लवानिया एम.एन.एण्ड जैन शशी के - रिसर्च मैथ्डोलॉजी, रिसर्च पब्लिकेशन*
2. *जैन पुखराज - भारत और आधुनिक विश्व, साहित्य*
3. *बेदालंकार - अन्तर्राष्ट्रीय संबंध राजपाल*
4. *मुकर्जी आर.एन. - पारिवारिक समाजशास्त्र विवेक*
5. *महाजन एवं महाजन-परिवार एवं समाज मेरठ प्रकाशन*
6. *मुकर्जी रविन्द्रनाथ-सामाजिक समस्यायें।*